International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 21-06-2023, Accepted: 07-07-2023, Published: 22-07-2023
Volume 9, Issue 4, 2023, Page No. 25-26

नारीवाद विचारधाराओं का आलोचनात्मक अध्ययन

पवन कुमार
UGC-NET JRF, स्नातकोत्तर, (राजनीति विज्ञान), IGNOU, New Delhi, India

सारांश
नारीवाद का प्रयोग सामान्यतया उस विचारधारा और आंदोलन के लिए किया जाता है। जिसका उद्देश्य सदियों से चले आ रहे हैं पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं की अधीनस्थ और उत्पीड़ित स्थिति को समाप्त करके उन्हें पुरूष के समकक्ष स्थान दिलाने का आकांक्षी है। नारीवाद पितृसत्ता सब को नारी के शोषण और उसकी निम्न स्थिति के पीछे मुख्य सामाजिक कारक मानता है। यह समग्र इतिहास को पैतृक सामाजिक सरंचना का इतिहास मानता है, जिसके दौरान पुरूष ने नारी पर शासन किया है। नारीवाद इस बात का आह्वान करता है कि पैतृक सरंचना के चलते पुरूष–प्रभुत्त्व से मुक्ति प्राप्त करने के लिए समाज के सभी वर्गों की महिलाओं को एकजुट हो जाना चाहिए। नारीवाद को एक स्वतंत्र अंतर्राष्ट्रीय राजनीति–सिद्धांत के रूप में मान्यता देना कठिन है। ज्यादा से ज्यादा यह एक विचारधारात्मक आंदोलन है जिसके साथ जुड़े हुए विचार को स्वतंत्रता, समानता और न्याय के सामान्य सिद्धांतों के अंग के रूप में पहचान सकते हैं। ऐतिहासिक क्रम में इस आंदोलन के मुख्य–मुख्य मुद्दे ये रहे हैं: स्त्रियों के अधिकारों को मानव अधिकारों की सामान्य श्रेणी के रूप में मान्यता दी जाए और स्त्री को परम्परागत पराधीनता से मुक्ति प्रदान करने के लिए स्त्रीत्व की नई परिभाषा दी जाए।

मूल शब्द: नारीवाद, विचारधारा, विश्वव्यापी, उत्पीड़न, शोषण, परम्परागत, पराधीनता समकक्ष

नारीवाद के विभिन्न रूप
लगभग आधे दशक के नारीवाद के इतिहास के दौरान, इसके तीन प्रमुख रूप उभरकर सामने आए हैं।

उदारवादी नारीवाद
यह नारीवादी विचारधारा का प्रासंगिक रूप है। यह उदारवाद की दार्शनिक परंपरा का अनुकरण करता है। ज्ञातव्य हो कि उदारवाद की बुनियाद बनें स्वतंत्रता, समानता और न्याय के विचार चारदीवारी में बंद महिलाओं के वास्तविक जीवन के अनुभवों के बिल्कुल विपरीत थे। इस परिप्रेक्ष्य में उदारवादी नारीवादियों ने ऐसे बिंदुओं पर बल दिया, जिससे महिलाओं के लिए स्वतंत्रता, समानता और समान अवसर उपलब्ध हो सकें। उन्होंने ऐसे कानून और सार्वजनिक नीतियाँ बनाने की वकालत की जो महिलाओं के लिए चयन की समानता और अवसर की समानता सुनिश्चित कर सके। उदारवादी नारीवाद ने इस मान्यता को दोहराया कि 'मनुष्य विवेकशाली प्राणी है'। उसकी विवेकशील प्रकृति ही स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय के अधिकारों का स्त्रोत हैं। स्त्रियाँ भी निसन्देह मनुष्य हैं और विवेकशील प्राणी के अनुरूप उन्हें भी पुरूषों के समान स्वतंत्रता तथा आत्मनिर्णय का अधिकार है। उदारवादी नारीवाद की सबसे बड़ी कमी यह थी कि यद्यपि इसने महिलाओं की असमानता और अधीनता को रेखांकित किया, परंतु इसने जेण्डर–उत्पीड़न की जड़ों का पर्याप्त विश्लेषण नहीं किया।

उग्र नारीवाद
1960 के दशक के उत्तरार्द्ध में उदारवादी नारीवाद की प्रतिक्रिया स्वरूप और आंशिक रूप में लिंगवाद के विरूद्ध आक्रोश के तौर पर संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन में उग्र नारीवाद का उदय हुआ। उग्र नारीवाद समय–समय पर काफी उग्र और मौलिक लेखन भी करते रहे हैं, लेकिन ये किसी भी राजनीतिक सिद्धांत के अनुयायी नहीं हैं। ये विकसित होती 'महिला संस्कृति' का भाग है, जो साहित्य, संगीत, स्वास्थ्य सेवाओं, रोजगार और प्रौद्योगिकी का नारीवाद विकल्प देने में प्रयासरत हैं। रेडिकल नारीवाद पितृसत्ता अर्थात् महिलाओं पर पुरूषों के प्रभुत्त्व की प्रणाली के प्रति अपने विरोध में अत्यधिक प्रखर है। इनका मानना है कि लिंग के आधार पर किया गया विभाजन प्रकृति का नहीं है। इसका निर्माता पितृसत्तात्मक समाज है और वही इसे जारी रखे हुए हैं। विभिन्न संस्कृतियाँ भले ही विभिन्न मूल्यों को प्रतिपादित करें, लेकिन आमतौर पर पुरूषों को 'दिन', 'सकारात्मक', 'आक्रामक', 'वस्तुनिष्ठ', और पुरूषों के प्रतिलोम के तौर पर महिलाओं को 'रात', 'कमजोर', 'भावुक', 'दब्बू', समझा जाता है। पुरूष संस्कृति महिलाओं को इस प्रकार से परिभाषित करती है कि जैसे वे पुरूषों की वासना पूर्ति का माध्यम मात्र हैं। रेडिकल नारीवाद बार–बार यह कहता है कि भले ही महिलाएँ इस सत्य पहचाने या नहीं हकीकत यही है कि वे मर्दों की यौन–गुलाम होती हैं। पितृसत्ता व्यवस्था में मातृत्व ही एकमात्र ऐसी चीज है जिससे कोई नारी वास्तविक पूर्ति और सम्मान पा सकती है। रेडिकल नारीवाद का विश्लेषण इस बात को दर्शाता है कि महिलाओं को जबरन मातृत्त्व और यौन गुलामी के पिंजरे से आजाद होना चाहिए।

समाजवादी या मार्क्सवादी नारीवाद
समाजवादी–मार्क्सवादी नारीवाद का उदय 1960 के दशक में पश्चिम में उभरे नारीवाद की दूसरी लहर के साथ हुआ। ये महिलाएँ नव–वामपंथी और समाजवादी थी। महिलाएँ नव–वामपंथी और समाजवादी थी। समाजवादी–मार्क्सवादी नारीवादियों का मानना है कि पूँजीवाद और पितृसत्ता एक–दूसरे को मजबूती प्रदान करते हैं। भले ही पुरूष वर्चस्व के रूप में पितृसत्ता का उदय पूँजीवाद से काफी पहले हुए है। पूर्व–पूँजीवादी समाजों में स्त्री और पुरूष दोनों समान रूप से उत्पादन प्रक्रिया में भाग लेते थे। औद्योगिकरण के प्रारंभिक दौर में भाग लेते थे। औद्योगिकरण के प्रारंभिक दौर में भी स्त्री और पुरूष दोनों सम्मिलित रूप से कारखानों में कार्य करते थे परंतु जैसे–जैसे औद्योगिकरण तीव्र होता गया, महिलाएँ इस प्रक्रिया से बाहर होती गई। यह धारणा प्रचलित होती गई कि महिलाओं की आय पूरक होती है, जब कि पुरूष श्रमिक वास्तविक 'जीविकोपार्जन' करते हैं। समाजवादी नारीवादी विचारकों का मानना है कि घर में काम करते हुए महिलाएँ ठीक उसी प्रकार से

'अलगाव' या एकाकीपन का शिकार हो जाती है। जिस प्रकार से पूँजीवादी व्यवस्था में काम करते श्रमिक। इस अलगााव की अनुभूति महिला को अपनी यौनिकता के संदर्भ में भी होती हैं। महिलाओं को अपनी यौनिकता पर भी कोई नियंत्रण नहीं होता। उन्हें पुरूषों की इच्छानुसार यौन संबंध स्थापित करना होता है। इस अवधारणा में विचारों का एक विस्तृत फलक समाहित है और इसके सामने व्यापक संभावनाएँ हैं।

उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद

इसके अलावा उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद भी है जो अधीनस्थ तथा प्रभुत्त्वकारी के उन औनिवेशिक संबंधों पर ही ध्यान देते हैं। जोकि 18वीं तथा 19वीं शताब्दी में यूरोपीय साम्राज्यवाद के अंतर्गत स्थापित किए गए थे। उत्तर–औपनिवेशिक नारीवाद दावा करते हैं कि प्रभुत्त्वकारी संबंध आज भी जीवित हैं तथा ये पश्चिमी ज्ञान के अंतर्गत निर्मित हैं जो कि दक्षिण के देशों तथा लोगों पर हावी हैं। इन नारीवादियों का मानना है कि पश्चिमी नारीवाद गैर–पश्चिमी नारियों के बारें में ज्ञान निर्मित कर चुका है। इसलिए ये नारीवाद उस पश्चिमी ज्ञान में निर्मित उस ज्ञान को आलोचना करते हैं जो मुख्यतः पुरूषों के जीवन से निर्मित है। क्योंकि यह ज्ञान विशेषाधिकृत पश्चिमी नारी के अनुभवों पर आधारित है।

इसके अलावा कुछ सांस्कृतिक नारीवादी भी हैं जो स्त्री को पुरूष से ज्यादा शांतिमय तथा पालन–पोषणकर्ता के रूप में देखते हैं। कुछ सांस्कृतिक नारीवाद स्त्रियों के हुनर की उनकी बच्चों, स्वास्थ्य, समुदाय के देखभाल की है कि पुरूषों को स्त्रियों से ऐसे हुनर सीखने चाहिए।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर एक अवधारणा के रूप में नारीवाद, महिला उत्पीड़न के विभिन्न पहलुओं को समझने की दिशा में प्रयासरत एक गतिशील और निरन्तर परिवर्तनशील एक विचारधारा है। नारीवाद के विभिन्न सम्प्रदाय, तमाम विषयों में भिन्न मत रखते हुए भी एक बिंदु पर एकमत हैं। वह यह कि स्त्री–पुरूष के वर्तमान संबंधों को बदला जाना चाहिए ये सभी सामान्य रूप से महिलाओं के लिए स्वतंत्रता और समानता के पक्षधर हैं। यह नारी के प्रति होने वाले अन्याय पर ध्यान केन्द्रित करता है और उनके प्रतिकार के उपायों पर विचार करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Ann Tickner J. Gender in International Relations: Feminist Perspective on Achieving Global Security, Columbia University Press, New York, 1992.
2. Jacaqui True, "Feminism', in Scott Burchil and Andrew Linklater (eds.), Theories of International Relations, 2nd edition, New York, Macmillan Press, 2001, 247-49.
3. Enloe C. The Morning After: Sexual Politics of the End of the Cold War, Berkeley, and see also Cythea Enloe in Martin Griffiths, Steven C. Roach and M. Scott Soloman an, Op. Cit, 1994, 287-93.
4. Zalewski M. 'The Women/Woman Question in International Relations, Millennium, 23,1994:2:407-23.
5. Ibid, p. 252 and see Morgot Light and Fred Halliday, 'Gender and International Relations, in A.J.R. Groom and Margot light (ed)', Contemporary International Relations: A Guide to theory, London, 1994, 45-52 and see also Jean Bethke Elshtain, 'Feminist Inquiry and International Relations', in Michael W. Doyle and G. John Ikenberry (ed), New Thinking in International Relations, Westview Press, Colorado, 1997, 77-88.